मनुष्य गति कारण–निवारण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

बड़े भाग्य मानुष तन पावा अर्थात जो जीव बहुत अच्छा कर्म करता है उसी को मनुष्य गति प्राप्त होती है। पुण्यार्जन की क्रियाएं जब अनासक्त भावों से की जाती है तो वे शुभ बंधन का कारण न होकर कर्म क्षय का कारण बनती है। संवर निर्जरा के कारण संयम और तप जब आसक्त भाव या फलाकांज्ञा से जुड़ जाते हैं तो वे कर्म क्षय या निर्वाण का कारण न होकर बंधन का कारण बन जाते हैं। जो आश्रव या बंधनकारक क्रियाएं हैं वे ही अनासक्ति और विवेक से समन्वित होकर मुक्ति के साधक बन जाती है। अतः शुभ–अशुभ भावों से हटकर वे कर्म बंधकारक नहीं बनते। हिंसा, अहिंसा, पुण्य–पाप, शुभ–अशुभ बाह्य परिणामों पर निभर नहीं होते, उनमें कर्त्ता की चित्तवृत्ति ही प्रमुख होती है।

शुभाशुभ कर्मों में प्रमुखता राग की उपस्थित या अनुपस्थित की नहीं, उसकी प्रशस्तता या अप्रशस्तता की है। प्रशस्त राग शुभ या पुण्य बंध का कारण माना गया है। अप्रशस्त राग पाप बंध का कारण है। यद्यपि राग–द्वेष साथ–साथ रहते हैं फिर भी जिसमें राग के साथ द्वेष की मात्रा जितनी अल्प और मन्द होगी, वह राग उतना ही प्रशस्त होगा। मनुष्य चारों गतियों में जा सकता है। पेड़–पौधे और तिर्यंच गति के जीव उसी गति में जन्म लेते हैं जहा वे उत्पन्न हुए हैं। मानव यदि अच्छा कर्म करता है तो देवलोक में जा सकता है। यदि वह बुरा कर्म करता है तो नरक योनि में जाता है। धर्मध्यान करना सबके प्रति प्रमोद भावना रखना अपने समान अन्य जीवों को समझने वाला, सदाचार करने वाला मानव योनि में जन्म लेता है। कर्मशास्त्र का यह सिद्धांत है कि जैसी करनी वैसी भरनी अर्थात् मनुष्य जैसा करता है वैसा ही उसके साथ होता है।

जीवन क्या है? सचेतन और अचेतन में क्या अंतर है? जैन दर्शन के अनुसार चेतना और भौतिक शरीर की संयुक्त अवस्था को जीवन कहते हैं। जीवित दशा में स्थूल भौतिक शरीर के साथ एक सूक्ष्म चेतन जुड़ा रहता है। भौतिक शरीर से इसका पार्थक्य ही मृत्यु है। जब तक

बंधन से मुक्ति नहीं मिलती तब तक आत्मा कर्म से बंधा रहता है। मृत्यु होने पर आत्मा से कार्मण शरीर ही पृथक् होता है। इसलिए यह कर्म ही भौतिक शरीर संरचना के प्रति उतरदायी है। अभौतिक आत्म तत्व का कार्य एक उत्प्रेरक के समान है। जीवित प्राणी का जीवन काल आयुष्य कर्म के द्वारा निर्धारित किया जाता है। जीवित प्राणी में श्वासोच्छवास, संज्ञा, भाषा, कषाय, इन्द्रिय, लेष्या और वेदना विद्वान रहते हैं। इन सभी का संचालन प्राणशक्ति के द्वारा होता है। जीवन भर ये संज्ञाएं इच्छाएं, भूख और प्यास, लालसा और संतोष प्रेम और घृणा भाव परिवर्तन और भय उत्पन्न करते हैं।

जिस प्रकार मानव में जीवन है उसी प्रकार पौधों और पशुओं में जीवन स्वीकार किया गया है। सभी प्रकार के जीवों में पृथ्वी के कीटाणुओं में उसी प्रकार जीवन है। लेकिन लकड़ी, पत्थर आदि पौद्गलिक वस्तुओं में जीवन नहीं है। ये जड़ पदार्थ हैं। इन्हें अचेतन कहा जाता है। चेतना भौतिक तत्वों का गुण नहीं है। भौतिक तत्वों में चेतना के संयोग से चेतना उत्पन्न होती हैं। वनस्पतियों और पशुओं में वातावरण के अनुकूल अपने को बनाने की एक प्रमुख विशेषता पाई जाती हैं। जिसके कारण बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में उनका अस्तित्व सुरक्षित रहता है। कुछ विशिष्ट प्रजातियां वातावरण के अनुकूल अपनी संरचना विशिष्ट प्रकार से करती हैं।

लैंगिक उत्पाद स्त्री और पुरुष के संसर्ग से होता है। पर्यावरण से जीवन प्रदान करने वाले पुद्गलों को एकत्रित कर जब आत्मा स्वतः जन्म धारण कर लेती है तो उसे सम्मूर्छन जन्म कहा जाता है। एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य सम्मूर्छन जन्म लेते हैं। कुछ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी सम्मूर्छन विधि से जन्म लेते हैं। सम्मूर्छन जन्म नर मादा के बिना संयोग से धारण हो जाता है। उपपाद जन्म केवल दैवी और नारकीय जीवों का होता है। अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में सम्मूर्छन प्रक्रिया के माध्यम से जीवन सम्भव नहीं हो सकता। प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति हो सकती हैं किन्तु आत्मा की उत्पत्ति नहीं होती। आत्मा अजर–अमर, अविनाशी और स्थायी तत्व है। जीवों का आवागमन बना रहता है।

शरीर का अस्तित्व और विकास आंशिक रूप से डीएनए पर निर्भर करता है। अंगों का निर्माण, जोड़ों का निर्माण, ढ़ांचे का निर्माण और ऐसे ही दूसरे जीवित रहने के कार्य और शरीर वृद्धि डीएनए और नामकर्म के परिणाम है। वैदिक धर्म के अनुसार स्त्री के गर्भाशय में वीर्याधान की

प्रक्रिया को गर्भाधान कहा जाता है। स्त्री का मासिक स्राव जब समाप्त होता है और जब उसके गर्भाशय में मनुष्य का शुक्राणु प्रवेश करता हैं तो ये भी गर्भाधान कहलाता है। आत्मा जब गर्भ में प्रवेश करता हैं तो उस समय आत्मा इन्द्रियों से युक्त भी होता है तथा उनसे शून्य भी होता है। गर्भाधान के समय आत्मा भौतिक इन्द्रियों से तो शून्य होता है परन्तु सूक्ष्म इन्द्रियों सहित होता है। शरीर केवल औदारिक, वैक्रिय और आहारक ही नहीं होता, बल्कि तैजस और कार्मण भी होता है। मनुष्य पंचेन्द्रिय प्राणी है। सभी प्राणियों में मानव श्रेष्ठ है, क्योंकि उसमें बुद्धितत्त्व है।